मैत्रेयीकृति

हिंदी ई-पत्रिका

विद्‍यार्थियों के लिए, विद्‍यार्थियों के द्‍वारा

वर्ष-1 अंक-2 जुलाई-दिसंबर 2019

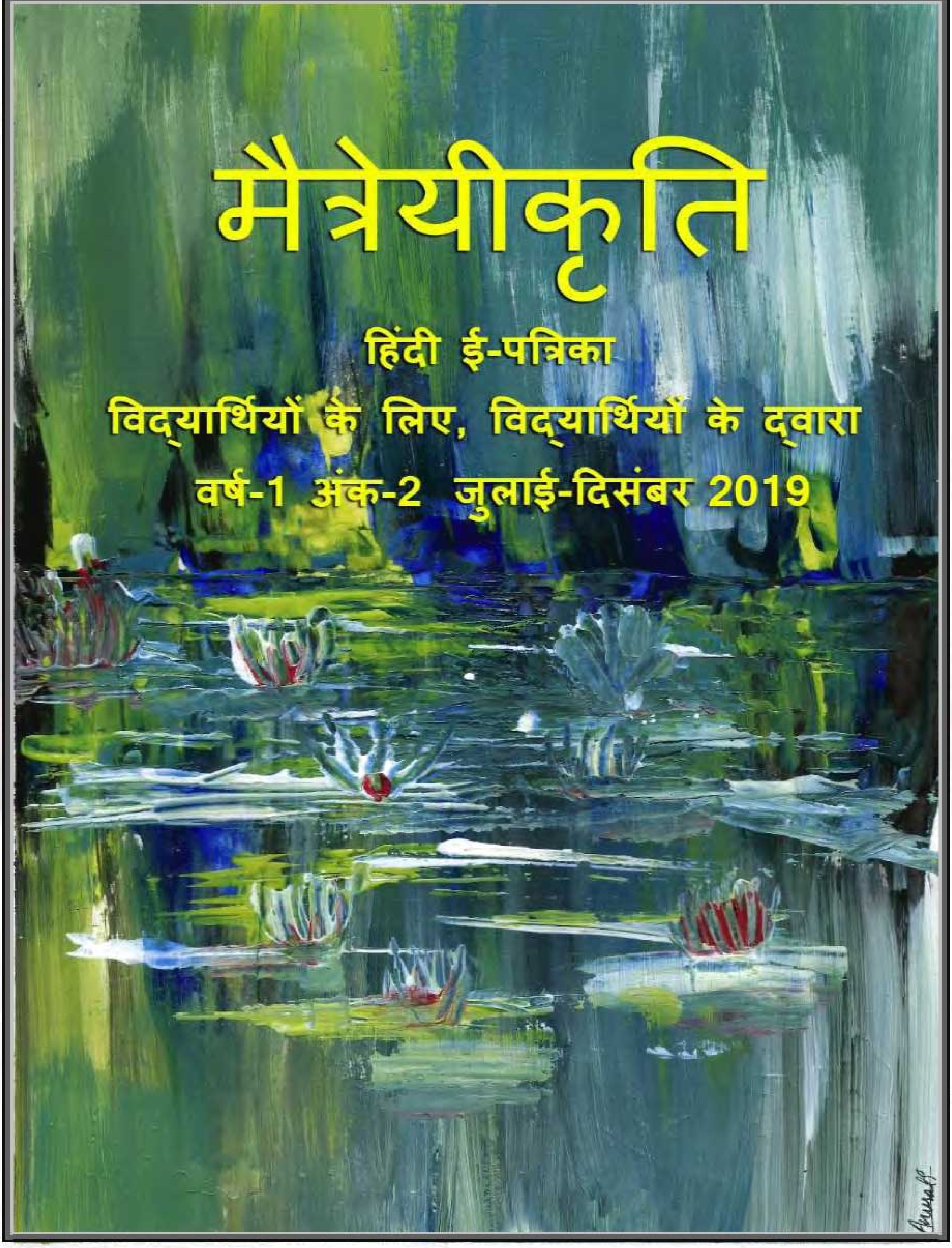

मैत्रेयीकृति (हिन्दी ई-पत्रिका)

मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

(NAAC द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त)

अनुरति, योजना, डॉ. पुष्पा गुप्ता, डॉ हरित्मा चोपड़ा, पीयूषी वर्मा, अंशुल

अंकिता

संरक्षण एवं परामर्श

डॉ हरित्मा चोपड़ा

प्राचार्या

संपादन

डॉ. पुष्पा गुप्ता

हिन्दी विभाग

आवरण पृष्ठ

अनुरति

हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

चयन एवं टंकण

अंशुल, योजना

हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

अंकिता, पीयूषी वर्मा

हिन्दी, विशेष द्वितीय वर्ष

तकनीकी संपादन

अंशुल

हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

शुभकामना संदेश

नया सत्र, नये विद्यार्थी, नया परिवेश और संतुलन की आवश्यकता -सब कुछ एक चुनौती की तरह होता है। लेकिन विद्यार्थियों की ऊर्जा और सक्रियता लगातार प्रयोगधर्मिता के नये आयाम खोजती है। यही कारण है कि कॉलेज प्रत्येक क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। कॉलेज का लक्ष्य प्रत्येक विद्यार्थी की रचनात्मकता का विकास करने का है अतः अभिव्यक्ति के अलग-अलग अवसर उपलब्ध कराये जाने की दिशा में हर संभव प्रयास किया जाता है। हिंदी की 'ई' पत्रिका मैत्रेयीकृति का यह दूसरा अंक भी इसी पहल के साथ आ रहा है।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. हरित्मा चोपड़ा

प्राचार्या

संपादकीय

गतिमान समय का प्रत्येक क्षण नये की तरफ कदम बढ़ाता है अर्थात अब जो है, कुछ ही क्षण बाद वह व्यतीत हो जाता है और स्वयं को इतिहास या परंपरा बना देता है। शिक्षण संस्थान भी इसी तरह लगातार गतिशील रहते हैं। सत्र का बदलाव जहां विद्यार्थियों के एक समूह को 'पूर्व' की श्रेणी में रख देता है, वहीं विद्यार्थियों का एक समूह' वर्तमान 'हो जाता है। जो अभी हैंऔर जो नए हैं, उनके बीच का अपरिचय जब टूटता है तो अभिव्यक्ति के नये स्वरों का सृजन होता है। रचनाओं का संपादन करते हुए मैंने पाया कि प्रोत्साहन की एक थपकी ही इन युवा रचनाकारों के भीतर छिपी प्रतिभा रूपी दीपक को प्रकाशित करने के लिये पर्याप्त होती है। पत्रिका के इस अंक में हम कला -दीर्घा के नाम से एक नया प्रयोग कर रहे हैं जिसमें कुछ चित्रकारों के स्वनिर्मित चित्रों को स्थान दिया जायेगा । इसके अतिरिक्त कविताएं, सामाजिक सरोकारों से जुड़े लेख, यात्रा-वृत्तांत आदि कई तरह की रचनाएं भी इस अंक में हैं।

पत्रिका के इस दूसरे अंक को आप सब को सौंपने से पहले मैं प्राचार्या डॉ हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनका सहयोग और प्रोत्साहन ही इस पत्रिका का मूलाधार है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में जुड़े विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिनके कारण पत्रिका का यह दूसरा अंक निश्चित अवधि में आ सकेगा।

डॉ पुष्पा गुप्ता

हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

मैं अत्यंत प्रसन्न हूं कि मुझे दोबारा भी विभाग की 'ई' पत्रिका से जुड़ने का अवसर मिला। पत्रिका से जुड़ने की स्थिति ने मुझे यह समझाया कि कभी-कभी यूंही कोई काम कर देना भी भविष्य के एक अवसर की पृष्ठभूमि होता है। पिछले वर्ष ग्रीष्मकालीन परियोजना (summer internship project) के दौरान अपने सहपाठियों के लिए लैपटॉप उपलब्ध कराना और प्रस्तुतीकरण में उनकी सहायता कर देना भी एक ऐसी ही स्थिति थी, जिसने मुझे विभाग की 'ई' पत्रिका से जोड़ा| इस अवसर ने जहां मुझे लेखन के अलग-अलग रंगों से परिचित कराया, वही मुझे कंप्यूटर प्रयोग के क्षेत्र में भी और अधिक सक्षम बनाया।

इस अनुभव के बाद मैं यह कहना चाहती हूं कि केवल पढ़ाई तो हमें डिग्रीधारी ही बनाती है, पर स्वयं को इस प्रतियोगी युग के योग्य बनाने के लिये कॉलेज में उपलब्ध अन्य अवसरों का भी भरपूर उपयोग करना चाहिए ताकि व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सके।

अंशुल

हिंदी विशेष

तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

कविता

1.	अध्यापिका	पीयूषी वर्मा	8
2.	धर्म	सौम्या नैन बिश्नोई	8
3.	माँ और बेटी	पीयूषी वर्मा	9
4.	हिंदी के बिना सब सूना	सोनू कुमारी	10
5.	चाय	अंशुल	10
6.	भारतीय वीर जवान	मनीषा मीणा	11
7.	वक्त	जयश्री यादव	11
8.	समय	गुलनाज	12
9.	मेरी माँ	अंकिता रावत	12
10.	मैं भारत की वो बेटी हूँ	अंजू	13
11.	विवाह	रचना	13
12.	माता-पिता	स्तुति दीक्षित	14
13.	उनकी मुस्कुराहट	वंदना मिश्रा	15
14.	यह शहर	श्वेता टांक	15
15.	बोलना शुरू कर दो	सिमरन चौहान	16
16.	दोस्त	सोनम	16
17.	मैं भी कुछ कहना चाहती हूं	एलीना थापा	17
18.	उम्मीद	वंदना	17
19.	वो केवल पिता हो सकता है	पूजा शर्मा	18
20.	समय	आरती	18
21.	हारने से मत डर तू	निधि मोहन	19
22.	काश तुम समझ पाते	अंशु तिवारी	20
23.	बारिश	मीनाक्षी	21

24. मन करता है — श्रद्धा बांठिया — 22

25. वह भारतीय सैनिक हमारा — देवयानी यादव — 23

26. मेरा सपना — प्रीति कुमारी — 23

गद्य

1. शिक्षित बेरोजगारी — रितिका — 24
2. जल का महत्व — नेहा ठाकुर — 24
3. पर्यावरण और मनुष्य के संबंध — जानवी मौर्य — 25
4. नारी सशक्तिकरण — वर्षा — 26
5. खुशी — लक्षिता — 27
6. हिंदी — अपराजिता — 28
7. व्यायाम और योग — नेहा छौंकर — 29
8. कॉलेज का पहला दिन — अनामिका सिसोदिया — 30
9. गंगा की आवाज — मीनू — 31
10. दहेज प्रथा — आयुषी गोहर — 32
11. परीक्षा का तनाव — सौम्या नैन बिश्नोई — 32
12. नफरत — कृतिका कपूर — 33
13. पिता का प्रेम — निशा — 34
14. शिक्षा — मनीषा लोहिया — 35
15. भारत में लैंगिक असमानता — ज्योति शर्मा — 36
16. ऐ जिंदगी — कहकशा — 37
17. माता-पिता — आंचल सोनकर — 38
18. विभिन्न सामाजिक सरोकार: कुछ विचार — कंचन — 39

कला

1. मृणाल — अनुरति — 43
2. नाचती बेला — अनुरति — 44
3. मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय — भावना शर्मा — 45
4. बारीकी में छुपी, सुंदरता की पहचान है — भावना शर्मा — 46

कविता

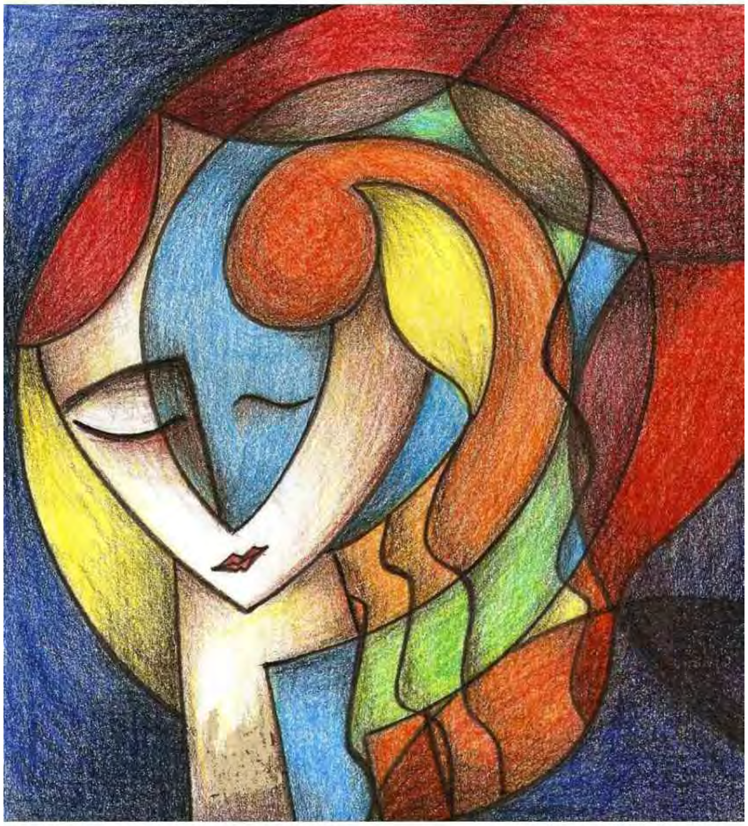

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा कैसे पूरी हो मन की।
दोनों मिल एक ना हो सके, यही विडम्बना जीवन की।

- जयशंकर प्रसाद

अध्यापिका

अज्ञानी को ज्ञान से अवगत कराती है
वह अध्यापिका कहलाती है।
झूठी सी इस दुनिया में
सब सच्चाई बताती है
वह अध्यापिका कहलाती है।
जहां मनोबल कम हो मेरा
वहां गागर में सागर भर जाती है
वह अध्यापिका कहलाती है।

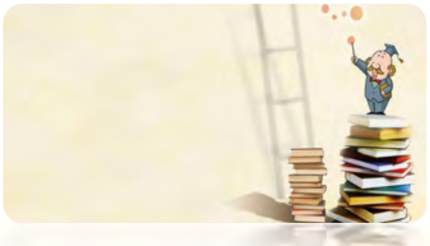

जीवन की कठिनाइयों में
सच से हमें अवगत कराती है
नई राह भी हमें दिखलाती है
वह अध्यापिका कहलाती है।
जब नाम शिष्यों का ऊंचा हो
कभी घमंड ना दिखलाती है।
हर व्यक्ति को वह
नई पहचान दिलाती है
वह अध्यापिका कहलाती है।।

पीयूषी वर्मा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

धर्म

धर्म
है विचारों का अंबार
जो नहीं बन सकता
जीवन का आधार
धर्मगुरुओं ने बना दिया
उसे जीवन की परिभाषा।
जो होता सही रूप
तो बन सकता
एक निराश व्यक्ति की आशा।
धर्म
है भारतीय जीवन का
सार्वभौमिक तत्व,
है इसका जीवन में महत्व।
हमें चाहिए
एक ऐसा धर्म,
जिसमें ना हो
कोई हिंसात्मक कर्म।
जब हर
धार्मिक इंसान,
बनेगा दयावान
तभी तो बनेगा
हमारा भारत महान।।

सौम्या नैन बिश्नोई

बी.ए.प्रोग्राम प्रथम वर्ष

माँ और बेटी

एक लड़की थी मैं
अपने परिवार की
आज बड़ी हुई तो
माँ की जिम्मेदारियाँ
समझ रही हूँ।
हाँ, मैं बड़ी हो रही हूँ।
चाय ठंडी हो रही है,
उठ बेटी चाय पी ले
सुबह उठते ही
यह आवाज़
गूंज रही है
मेरे कानों में ।
हाँ मेरी माँ
मुझे आवाज़ दे रही
जल्दी से तैयार हो
स्कूल, कॉलेज जा
भोजन मैं तैयार कर रही हूँ
मेरी माँ मुझे कह रही है।
किसी के डांटने पर
मुझे लड़ने से रोक रही है।
हां, मेरी मां मुझे कह रही है
पल-पल में बातों से
मुझे समझा-बुझा रही है।
तुझे दूसरे घर जाना है
यह बोलकर आंखों में
ममता के 'आंसू लिए
कह रही है
बेटी तू तो बड़ी हो रही है ।
आया है,
आज का दिन
माँ से विदाई लेने का
होठों पर मुस्कान लिए भी
टाटा बाय-बाय बोल रही है।
बेटी तू बड़ी हो गई
यही कह रही है।
बेटी भी ससुराल जाकर
माँ जैसी जिम्मेदार हो गई है
देख-देख कर मां
अपने अंदर ही अंदर रो रही है।
मेरी बेटी बड़ी हो गई
मेरी मां यह बोल रही है।

पीयूषी वर्मा

हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

हिंदी के बिना सब सूना

हिंदी तो है मां की भाषा

हिंदी मां -सी महान है।

हिंदी से ही तो पहचान है।

हिंदी मेरा अभिमान है।

अ अनपढ़ से शुरू होती

आखिर में देती ज्ञान है।

हिंदी के बिना सब अधूरा

कदम-कदम पर देती

एक नई पहचान है।

हिंदी से मिलती

संसार में पहचान है।

पढ़ा- लिखा भी हिंदी बोले

अनपढ़ भी बोले

हिंदी सब को जोड़े

यही तो हमारी पहचान है।

सोनू कुमारी

हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

चाय

सुबह भी तू,

शाम भी तू।

तू ना मिले तो

दिन की शुरुआत नहीं।

बस चाय की

वह दो घूंट

दिन की शुरुआत हो जाए।

अगर तू ना मिले तो

दिन भी आलस में निकल जाए।

शाम होते ही

फिर से तेरी याद आने लगे।

मन फिर घूंट भर

चाय पीने को करने लगे।

तेरी एक घूंट से

मेरी नींद उड़ जाए।

थक जाऊं तो

बस तुझे याद करूं।

मेरे हर दर्द का समाधान

बस चाय की,

वह दो घूंट।

अंशुल

हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

भारतीय वीर जवान

देश की शान है,
इस देश के वीर जवान।
अपने घर-परिवार से दूर,
अनजान शहर को अपनाते हैं।
उस मिट्टी को नमन कर,
वह अपने शीश कटाते हैं।
ना होली, ना दिवाली,
वह तो युद्ध में खून बहाते हैं।
जिस मिट्टी में वे जन्मे थे,
जिस मिट्टी में वह खेले थे ,
उसी मिट्टी पर
आखिरी नींद सो जाते हैं।
उसी मिट्टी में मिल जाते हैं।
लिपट तिरंगे में वह, जब
अपने घर को आते हैं।
गले लगाने को वह बूढ़ी मां
रोती रह जाती है।
नमन है उस पत्नी को,
जिस का वह अभिमान है।
जो पति पर गर्व दिखाती है,
शीश उठाकर सबको बताती है।
वह मरे नहीं,
वह तो शत्रु को
मार कर आए हैं।
वह हार कर नहीं,
वह तो देश को
जिता कर आए हैं।
वह तो देश के वीर जवान हैं।

मनीषा मीणा

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

वक्त

एक अजीब सा शहर है।
यहां कोई नहीं रूकता
किसी के लिए ।।
घड़ी की सुई
एक दूसरे से भागती हैं
और यहां लोग थमते नहीं।
पहले वक्त में कुछ सुकून था,
कुछ करने का जुनून था
और अब जुनून भी नहीं है।
वक्त कितना जल्दी बदल गया।
सब के जीने का मकसद
भी बदल गया।

जयश्री यादव

बी.ए. प्रोग्राम ,प्रथम वर्ष

समय

समय
ना तेरा हुआ ,
ना मेरा हुआ
यह अपनी चाल चलता है।
जो इसके साथ चला,
समय उसका हुआ ।
जो इसके साथ चला
उसका जीवन सफल हुआ।
समय की सुई चलती है ,
दिन ढलता है।
जीवन का एक दिन
यूं ही कम होता है।
समय और जीवन
कभी नहीं रुकते हैं।
सिर्फ हम कहते हैं,
आज नहीं ,कल नहीं, परसों
लेकिन
हमारा आज-कल- परसों
कभी नहीं आता
और समय चलता जाता
समय
ना तेरा हुआ,
ना मेरा हुआ।

गुलनाज

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मेरी माँ

रोज सवेरे रूप देखकर
जिसका मैं संवरती हूँ,
उसी माँ की कोख़ से
मैं जन्मी हूँ।
उसके लिए शब्द नहीं है ,
फिर भी मन व्याकुल है,
कुछ लिखने को ।
लिखूं तो फिर क्या लिखूं?
शब्द नहीं है कहने को।
उनके बिना ना दिन गुज़रता है,
ना रात।
उनके बिना जीवन अधूरा सा है,
जो खड़ी है हमेशा मेरे साथ।
बचपन से लेकर
अब तक माँ,
तूने ही संभाला
कैसे करूँ मैं
तेरा धन्यवाद।
अब बचा नहीं
कुछ कहने को।।

अंकिता रावत

हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मैं भारत की वो बेटी हूँ

मैं भारत की वो बेटी हूँ,
जिसे समाज नकारता है
और मुझसे
संतान की उम्मीद लगाता है।
लड़का हुआ तो ढोल बजाते हैं।
तो फिर क्यों मेरे होने पर
लोग मातम मनाते हैं?
लड़कों को बचपन में
खेल-कूद, पढ़ना-लिखना सिखाते हैं
और उसी बचपन में मुझे
सिखा कर चूल्हा चौका
मेरी शादी कर डालते हैं।
मेरी क्या गलती होती है,
जो लोग मुझे बचपन में ही
मार डालते हैं।
हम ही उनके वंश को आगे बढ़ाएं
ऐसी हमसे उम्मीद रखते हैं।
अपनी माँ की मैं सारी दुनिया हूँ।
वह बेचैन होती है,
मुझे अपनी जिंदगी
में लाने के लिए।
तो क्यों मुझे
उससे दूर कर देते हैं।

मैं भारत की वो बेटी हूँ
जिसे समाज पूजता भी है और मारता भी है।
यह वह समाज है,
जो बेटी होने पर
उन्हें कोख में ही मार डालता है,
पर देवी बना पूजता है।
मैं भारत की वो बेटी हूँ।।

अंजू

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

विवाह

विवाह केवल मेल नहीं,
दो अनजान व्यक्तियों का।
विवाह केवल मेल नहीं,
दो परिवारों का ।
विवाह नहीं केवल
एक संबंध या बंधन।

विवाह तो मेल है,
एक संस्कृति और
सभ्यता का ।
विवाह साथ है,
दो व्यक्तियों के कई जन्मों का ।
विवाह नाम है
दो व्यक्तियों के
जीवन भर प्यार के
अहसास में बंधने का ।

रचना

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

माता-पिता

कहने को हैं बातें कई
माता-पिता हैं दुनिया में सर्वोपरि ।
दिया जिसने जन्म
रहने दो उसके आंचल में।
बड़े हुए तो क्या हुआ
जाने दो फिर उस सावन में ।
बचपन में से आज तक
छोड़ा नहीं दामन
उन्होंने हर दिक़्कत में ।
ना जाने कैसे
छोड़ देते हैं लोग,
वृद्धाश्रम में
माता-पिता को।
सही-गलत सिखा दिया
और गलत पर
कभी पिटाई भी की।
खुशी होती है
अब उस मार पर भी ,
जिसने हमें
सही राह की सीख दी ।
न बंगला,
न गाड़ी
अब चाहिए।
चाहिए
बस माँ का कोमल हाथ,
वह पापा का छिपा प्यार।
अब बस फिर बिताने दो
कुछ पल साथ।
पापा की डांट की
अब बहुत याद आती है ।
मम्मी को छेड़ने में
आज भी उतना ही
मजा आता है ।
जिंदगी भर साथ रहूंगी
छोड़कर ना जाऊंगी
कहीं और ।
बाहर की दुनिया में
बहुत कुछ सीखा है,
अब लगते हैं माता-पिता
दुनिया में सर्वोपरि ।

स्तुति दीक्षित

बी.ए.प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

उनकी मुस्कुराहट

उनके दुखों से हम अनजान हैं,
वह हमसे कितने परेशान हैं ।
वह जानते नहीं हैं,
उनकी मुस्कुराहट हमारी पहचान है।
वह उम्मीद की किरण की तरह
हमें आगे बढ़ाना सिखाते हैं।
वह हर राह में
हमें चलना सिखाते हैं,
लेकिन हम उनकी
हकीकत से अनजान है।
वह जानते नहीं
उनकी मुस्कुराहट
हमारी पहचान है।
करते हैं
हर कर्तव्य को पूरा,
उनकी मंजिल इतनी
भी नहीं आसान है ।
हमारी कामयाबी ही उनकी शान है ।
लेकिन वह जानते नहीं,
उनकी मुस्कुराहट
हमारी पहचान है।

वंदना मिश्रा

हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

यह शहर

जब देखती हूं
इस शहर को मैं
बड़ा ही मलाल
होता है ।
मुझे मुर्दा जिस्म
दिखते हैं ,
इन जिंदा चेहरों में।
बेमकसद भागती भीड़ दिखती है
सुबह के पैरों में।
मासूम किलकारियां दिखती हैं,
रास्ते में पड़ी आंसू की लहरों में।
मजबूर शख्स दिखते हैं
दबे समाज की लहरों में।
रोशनी से चमकते लोग दिखते हैं
मन के अंधेरों में।
जब देखती हूं
इस शहर को मैं
तनहाई में मशरूफ
दिखता है मुझे।

श्वेता टांक

बी. ए.प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

बोलना शुरू कर दो?

अपनी आवाज कब उठाओगे?

यहां बहुत है जिम्मेदारी ।

अपनी सत्ता बनानी है,

अपनी आवाज से|

हद से ज्यादा ना बोल कर

हक की ही आवाज उठानी है।

बोलना शुरू कर दो

बस अपनी आवाज से ।

बस

लोगों में अपनी पहचान बनानी है।

सोच-समझ कर

अपने सपनों को बुनें ।

उस सपने को अपनी

दिन-रात-दोपहर देकर,

दिल की यह आवाज

दुनिया तक पहुंचानी है ।

शुरू कर दो बोलना

क्योंकि अपनी आवाज से,

अपनी संस्कृति ,अपने समाज की

दिशा बनानी है|

सिमरन चौहान

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

दोस्त

मैं आज भी तलाश में हूं उसकी,

जो दूर हो गई है मुझसे|

मेरी वो दोस्त,

जिसके साथ मैंने जाना

दोस्ती का असल मतलब|

उसके साथ गुजारा समय

आज भी मुझे याद आता है|

न जाने कहां चली गई

मेरी वो दोस्त|

उसके साथ ही मैंने जाना

दोस्ती निभाई कैसे जाती है?

जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए ,

पर उसने मेरा साथ नहीं छोड़ा|

मेरे सुख-दुख की साथी थी वह,

न जाने कहां चली गई

मेरी वो दोस्त।

सोनम

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मैं भी कुछ कहना चाहती हूं

मैं भी कुछ कहना चाहती हूं,
तू मेरी भी सुन|
सबकी तो सुन ली तूने,
सबसे पूछ भी लिया,
फिर मुझसे ही क्यों
ऐसा भेदभाव ।
मैंने भी तो आखिर
इस भूमि पर जन्म लिया है|
मेरे भी तो दो कान हैं,
दो आंखें हैं,
एक मुंह है|
फिर क्यों करता है ?
समाज मेरे साथ
ऐसा बर्ताव ,
जैसे कि मैं हूं
कोई बेकार प्राणी|
मैं भी कुछ कहना चाहती हूं ,
तू भी मेरी सुन|
मुझे भी खेलना है
बाबा के साथ,
सोना है
मां के आंचल में |
तूने तो कह दिया
हूं मैं एक लड़की, इसलिए
वह सारे अधिकार प्राप्त नहीं।
मैं भी कुछ कहना चाहती हूं
तू भी मेरी सुन।

एलीना थापा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

उम्मीद

माना आज
तेरे जीवन में अंधेरा है,
तो क्या हुआ?
कल फिर एक नया सवेरा होगा ।
तू दुखी मत हो ऐ मनुष्य,
तेरे जीवन में भी
खुशियों का डेरा होगा,
तू निराश मत हो ऐ मनुष्य,
बस हिम्मत करके आगे बढ़ ।
तेरे जीवन में भी
सफलता का मेला होगा।

वंदना

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

वो केवल पिता हो सकता है

दुनिया की सब खुशी देने वाला
पिता ही हो सकता है|
कभी अपनी तरफ नहीं देखता,
बस बच्चों की
खुशी में मगन हो जाता है,
वो केवल पिता ही हो सकता है।
सब के नसीब में नहीं होते पिता
इसलिए कभी
ना दुखाना दिल उनका|
उनके लिए करो कुछ तो
कभी न जताना क्योंकि
वो केवल
पिता ही हो सकता है ,
जिसका ऋण तुम
नहीं चुका सकते
जिंदगी- भर|

पूजा शर्मा

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

समय

समय नहीं लोगों के पास,
एक दूसरे से बात करने के लिए।
कुछ समय रहता है
तो काम करते हैं या खेलते हैं
मोबाइल में ।

परिवार के साथ
बैठ कर ना बात करना,
ना खेलना
समय ही नहीं है
लोगों के पास ।
परिवार दूर होता जा रहा है
इसी वजह से।
जिंदगी भागदौड़ की
तरफ बढ़ रही है|
समय नहीं है
लोगों के पास!

आरती

बी. ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

हारने से मत डर तू

हारने से मत डर तू|
इन सब कठिनाईयों से निकलेगा तू,
हार के डर से तू लड़ना सीख

हार के दुख से तू उबरना सीख।
हार का सामना बहादुरी से
और डटकर कर तू।
ये ही है
तेरी कामयाबी की पहली सीढ़ी,
इसका सामना
तू हिम्मत से कर ।
विजय तू खूब पाएगा,
अपनी
हार से ही तो तू
कुछ सीखता जाएगा।
ये ही तेरी कामयाबी की सीढ़ी,
इसका सामना करने की तू
बस हिम्मत तो कर।
जब तू
यह जान जाएगा कि
यह हार नहीं बल्कि
एक नया अवसर है
तेरे लिए,
तब तू जीत की लहर में
बहता जाएगा।
अपनी जीत का
परचम तब तू फहराएगा।
यह हार नहीं बल्कि
तेरा सबसे बड़ा शिक्षक है।
कुछ सीख उससे
हारने से मत डर तू,
इन सब कठिनाइयों
से निकलेगा तू
हारने से मत डर तू|

निधि मोहन

बी.ए.प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

काश तुम समझ पाते

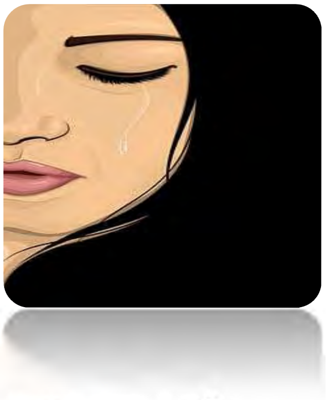

काश तुम समझ पाते,
तो इतना मुश्किल ना होता,
तुम्हें समझाना।
अगर तुम समझ जाते
कि क्या कहना चाहती थी मैं।
उस दिन जब
घर आए थे,
अगर तुम समझ जाते
तो आज मुझे यूं
भरी महफिल में,
इतने लोगों के बीच
देना ना पड़ता
अपनी बेगुनाही का सबूत|
अगर तुम उस दिन समझ जाते,
बिना कुछ कहे
मेरी बातों का इशारा
तो इतना सब कुछ
कहना ना पड़ता मुझे|
अगर तुम समझ जाते
मेरी अनकही बातों को,
मेरी खामोशी को ।
शायद तुम समझना
ही नहीं चाहते|
मेरी बात ना समझने का,
एक कारण तुम्हारा "मैं" था|
जिसको तुम हमेशा साथ
लेकर चलते थे|
तुम्हें आगे-पीछे
कोई दिखता ना था ।
सिर्फ मैं, मैं, मैं का,
भाव तुम में था|
यही कारण था कि
तुम्हें कुछ भी
समझ आता ना था ।
अगर तुम
उस दिन समझ जाते,
काश, तुम समझ जाते।

अंशु तिवारी

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बारिश

बारिश जब आती है,
अनेकों खुशियां लाती है,
उसके आने से
मनुष्य झूम उठता है ।
बारिश का हर दिन,
हर रात सुहानी लगती है।
किसानों को
बारिश अमृत लगती है
क्योंकि मिलता है,
उनकी फसलों को जीवन।
बारिश के दिनों में
सभी रहते हैं अपने घरों में ।
बारिश जब होती है
भीगने के लिए
मन व्याकुल हो उठता है,
मन झूम उठता है।
बारिश बहुत ज़रूरी है
क्योंकि
पुनर्जीवन मिलता है
हर पेड़ को ।
धरती भी अपने को
प्रसन्न महसूस करती है
क्योंकि पूर्ण होने लगता है
जल का स्तर ।
पेड़, पौधे और नदियां भी
उल्लास से भर उठते हैं ।
चारों तरफ हरियाली होती है,
मोहित कर लेती है,
जो मन को ।
बारिश जब आती है,
सबके लिए अनेकों
खुशियां लाती है।

मीनाक्षी

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मन करता है

मन करता है,
निगल लूँ सब कष्टों को ,
डराते हैं जो मनुष्य को ।
सहम जाता है
वह छोटी-छोटी तकलीफों में |
जी चाहता है ,
कुछ करूं उनके लिए
हैं जो ग्रस्त अभावों से,
मजबूर हो फिरते हैं
सड़कों पर
भीख मांगने के लिये |
मेरा मन करता है,
ऐसा कदम उठाऊँ
हो जाये अभाव खत्म |
न सिर झुकाना पड़े
आने वाली पीढ़ी को |
आज व्यक्ति है गुमराह ,
यथार्थ को छोड़कर
करता है भविष्य से होड |
सामने की खुशियों छोड़ ,
धन के लिए लगाता दौड़ |
जबकि देखो तो
एक बच्चे को ,
वह खुश रहते हैं
छोटी- छोटी खुशियों में |
उनकी वह मुस्कान
स्पर्श करती है हृदय को |
सच तो यह है
जीवन में उतार-चढ़ाव
काल की गति है |
पर, हिम्मत रखना ,
डटकर सामना करना
एक कला है ।
अगर खुश रहें
छोटी-छोटी खुशियों में ,
शुक्रगुजार हो
ईश्वर के तो
खुशियां सभी आ
जाएंगी जीवन में \

श्रद्धा बांठिया

बी. ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

वह भारतीय सैनिक हमारा

वो भारतीय सैनिक हमारा
मुसीबत में वह भरा
शत्रुओं से वह कांपा नहीं |
चाहे हो विपदा कितनी भी
डटा रहा सैनिक हमारा।
चाहे हो शीत या हो ग्रीष्म
या हो कितनी भी विपरीत धारा ,
वो डरा नहीं, वो झुका नहीं
डटा रहा सैनिक हमारा |
अपनी शुभचिंतकों से दूर,
सुख- सुविधा से दूर ,
आखिर क्यों खड़ा सैनिक हमारा
ताकि हिंद रहे सलामत हमारा ।
चाहे हो पाकिस्तान या हो चीन ,
हो कच्छ का रण या कारगिल
जान की बाजी लगाता |
ना हौंसला उसका डगमगाता ,
आखिर क्यों खड़ा सैनिक हमारा
ताकि हिंद रहे सलामत हमारा |
तिरंगे में लिपटा घर को आता ,
मर कर भी अमर बन जाता |
यूं ही नहीं वह वीर कहलाता
वह भारतीय सैनिक हमारा।

देवयानी यादव

बी ए प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

मेरा सपना

क्या है मेरा सपना ,
मन में है यह
अजीब सा सदमा |
किस दौड़ में भाग रही मैं
हर रोज अपने को बहका रही |
दिन-रात बैठकर खोयी मैं
अपने मन की उलझन में |
पीछे खींचे मेरा हर पल ,
आखिर क्या है मेरा कल |
हर किसी से पूछ रही मैं
अपने मन की उलझन ,
थोड़ा मुस्कुरा कर रहना है ,
सब कुछ समझ कर रहना है |
जिंदगी के दो पल मिले हैं ,
इन लम्हों को जीना है |
कुछ ना सही तो हंसना
हमें सभी से मिल-जुल कर रहना है।।

प्रीति कुमारी

बॉटनी विशेष,   द्वितीय वर्ष

गद्य

साहित्य का कर्त्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है बल्कि एक नया वातावरण भी देना है।

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षित बेरोजगारी

आज के इस तकनीकी दौर में हमारा देश बहुत बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ अपने नाम कर रहा है। वह सबसे आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है। विश्व स्तर पर भी हमारे राष्ट्र की एक अलग छवि बनी हुई है, परंतु आज भी हमारे देश में बहुत सारी समस्याएं हैं जैसे:- गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि जो हमारे देश की प्रगति में बाधा डाल रही हैं। भारत की आर्थिक व्यवस्था ठीक ना होने का एक कारण बेरोजगारी भी है। बेरोजगारी अन्य बहुत सारी समस्याओं को जन्म देती है। आज हमारे समाज में बहुत लोग शिक्षित हैं किंतु उनके पास कोई नौकरी नहीं है। बेरोजगारी हमारे देश पर काला धब्बा बन गयी है। बेरोजगारी, गरीबी का भी एक कारण है। सरकार बेरोजगारी को खत्म करने का प्रयास कर रही है किंतु कोई सफलता हासिल नहीं कर पायी। बेरोजगारी एक भयानक स्थिति है जो हमारे समाज में फैलती ही जा रही है। हमें इसको खत्म करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा यह हमारे देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती रहेगी। सरकार को बेरोजगारी खत्म करने के लिए मज़बूत कदम उठाने चाहिए ताकि हमारा देश भी विकसित और समृद्ध हो सके।

रितिका

बी.ए. प्रोग्राम , प्रथम वर्ष

जल का महत्व

हमारे जीवन में जल का महत्व बहुत अधिक है। जल के बिना जीवन असंभव है। जल के बिना मनुष्य तो क्या किसी भी प्राणी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। संसार में रहने वाले हर एक जीव-जंतु के लिए जल बहुत ही आवश्यक है । यदि पृथ्वी पर जल समाप्त हो जाएगा तो कोई भी जीवित नहीं रह पाएगा क्योंकि संसार के सभी प्राणी, पेड़-पौधे जल पर ही निर्भर हैं। परंतु आज मनुष्य अपनी विभिन्न व्यावसायिक

गतिविधियों के द्वारा जल को संकट में डाल रहा है |मनुष्य जल का अधिक से अधिक प्रयोग कर रहा है, जिसकी वजह से पृथ्वी का जल समाप्त होता जा रहा है। शहरों में पानी का स्तर बहुत घट गया है तथा गांव में हैंडपंप, नल इत्यादि का पानी भी सूखता जा रहा है, इसलिए हमें जल का जरूरत अनुसार ही प्रयोग तो करना ही चाहिए, साथ ही विभिन्न उपायों से जल संरक्षण का प्रयास भी करना चाहिए।

नेहा ठाकुर

हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

पर्यावरण और मनुष्य के संबंध

ईश्वर ने हमको सब कुछ दिया है, परंतु हमने ईश्वर को कुछ नहीं दिया है। बल्कि ईश्वर की दी हुई वस्तुओं को नुकसान पहुंचाया है । अब मनुष्य अपने जीवन में इतना व्यस्त रहने लगा है कि वह यह नहीं समझ पा रहा कि क्या सही है और क्या गलत? मनुष्य ईश्वर की दी हुई सौगात जैसे पेड़-पौधे, नदी, पहाड़ आदि पर ध्यान नहीं देता है । आजकल मनुष्य फोन में व्यस्त है कि पर्यावरण के साथ कैसे संबंध बनाना है? वह भूल गया है। पहले के समय में हम पेड़ लगाते थे, अब काटते हैं क्योंकि मनुष्य को जगह ही जगह चाहिए। मनुष्य को पेड़ों को देखना चाहिए, पेड़ों की घटती संख्या पर ध्यान देना चाहिए। नदी में नहा कर उसका आनंद लेना चाहिए, पेड़ लगाकर उसकी प्यारी महक को महसूस करना चाहिए, मनुष्य को पर्यावरण के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए ताकि मनुष्य और यह धरती बची रह सके।

जानवी मौर्य

बी.ए.प्रोग्राम,प्रथम वर्ष

नारी सशक्तिकरण

नारी भगवान की एक खूबसूरत रचना है। नारी से ही यह पूरा संसार चलता है। वह अगर कोमल होना जानती है तो समय पड़ने पर कठोर भी हो सकती है। नारी भारत में किसी ना किसी रूप में पूजी जाती है। नारी के कई रूप हैं जैसे माँ, बहन, दोस्त इत्यादि। नारी को हर जगह सम्मान मिलना चाहिए, यह उसका अधिकार है। किंतु दुर्भाग्यवश नारी को भारत में समानता का वह अधिकार एवं सम्मान नहीं मिल रहा, जिसकी वह अधिकारी है। नारी की प्रताड़ना तथा यौन शोषण आजकल

आम बात हो चुकी है। यह भारत के लिए चिंता का विषय है। नारी को संविधान ने पुरुष के बराबर का दर्जा दिया है किंतु पुरुष को यह खटक रहा है, यह एक बुरी बात है। यह स्थिति देश की प्रगति पर बुरा प्रभाव डाल रही है। भारत सरकार ने नारी सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए हैं तथा वह काफी हद तक कामयाब भी हो चुकी है। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" यह योजना तो सभी जानते ही होंगे। महिलाओं को सम्मान तथा आगे बढ़ने का मौका जरूर मिलना चाहिए उनका मौलिक अधिकार है:

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग- तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में"

वर्षा

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

खुशी

मैं आपको खुशी का महत्व तो नहीं, पर मेरे लिए खुशी क्या है वह बताना चाहती हूँ। मेरे लिए ईश्वर, माता–पिता, परिवार और हर वह जीव जिसमें जान है, को खुश देखना ही खुशी है| पत्तों का झूमना, पशुओं का घूमना और हर मनुष्य के चेहरे की लालिमा ही मेरी खुशी है। एक कुत्ते को प्यार करना और उसके साथ खेलना खुशी है। खुशी की कोई परिभाषा नहीं होती, वह तो एक भाव है जिसे हम अनुभव करते हैं।

खुश रहने के लिए हमें किसी सांसारिक वस्तु की जरूरत नहीं होती। यह तो मन में उत्पन्न होती है उसे कुल्फी खाने से लेकर महंगी कार लेने तक ढूंढा जा सकता है। जब हम खुश रहते हैं तो हमारे मन में सकरात्मक भाव होते हैं, जिससे हमारे आसपास की हर चीज पर असर पड़ता है। हम क्या सोच रहे हैं? हम कैसा काम कर रहे हैं? इसका प्रभाव हर चीज पर दिखाई देता है। हमारी खुशी सिर्फ हमें ही प्रभावित नहीं करतीं बल्कि हमारे वातावरण की हर वस्तु पर असर डालती है। जब हम खुश हैं तो हमें हर चीज में अच्छाई दिखती है और दुखी हों तो बुराई दिखती है।

खुशी वह सकारात्मक शक्ति है जिससे हम जीवन में अपने हर मुकाम को पा सकते हैं और अपनी जीवन को अच्छे से चला सकते हैं।

लक्षिता

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

हिंदी

आज मैं आपको अपनी भाषा हिंदी से मिलवाऊंगी। वह हिंदी जिसे आप छोड़कर जा रहे हैं या छोड़ चुके हैं। साथियों मैं कहना चाहती हूँ कि हिंदी केवल एक विषय ही नहीं है, एक भाषा भी नहीं अपितु हमारी धरोहर है, संस्कृति है, हमारी आन बान शान है । हम सब की भाषा है हिंदी, जो हम सबको एक साथ जोड़ कर रखती है। हमें एक पहचान देती है, विश्व भर में हिंदी ख्याति दिलातीहै। हिंदी एकता की पहचान है तथा हम सब को एक सूत्र में बंधे रहने की प्रेरणा भी देती है। परंतु ना जाने कुछ हिंदी भाषी लोगों को अपनी ही हिंदी भाषा से समस्या होती है वह हिंदी से दूर होना चाहते हैं या हिंदी को ही अपने से दूर रखना चाहते हैं। वह हिंदी के महत्व को जान ही नहीं पाए हैं और दूसरों की भाषा का महत्व हमें बताते हैं। उन्हें पाश्चात्य संस्कृति ने इतना अधिक प्रभावित कर दिया है कि वह उसी रंग में डूब गए हैं।

उन्हें अपनी ही भाषा का महत्व नहीं पता। हिंदी भाषी क्षेत्र के जिन लोगों ने अपनी हिंदी का डंका संसार भर में डंका बजाया है, उस हिंदी पर हम सभी लोगों को गर्व का अनुभव होना चाहिए।

अपराजिता

हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

व्यायाम और योग

वर्तमान समय में व्यायाम व योग हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि आज लोग अपना सारा समय टीवी, मोबाइल और मनोरंजन को दे रहे हैं। वह कोई भी व्यायाम और योग नहीं करते हैं जिसके कारण उनके शरीर में अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। आज के बच्चे भी स्कूल के बाद सारा दिन टीवी और मोबाइल पर अधिक समय बिताते हैं। जिसके कारण बच्चों में शारीरिक व मानसिक बीमारी हो जाती है। बच्चे शारीरिक खेलों से बहुत दूर हैं। खेल सिर्फ वही बच्चे खेलते हैं जिन्हें किसी प्रतियोगिता में भाग लेना हो या जिन्हें खेलना पसंद है। पहले बच्चे पास के घरों के बच्चों के साथ मिलकर खेलते थे और रोज शाम को अपने दोस्तों को भी ले जाते थे। पहले बच्चों में भाईचारा था और अब तो कोई आपस में बात भी नहीं करता। अनजान बच्चों के साथ खेलना तो दूर, उनके साथ तक चलना पसंद नहीं करते। पहले बच्चों में एकता भी होती थी। यह सारी भावनाएँ बच्चों में ही नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में होती थी। आज के समय में सभी अकेलापन महसूस करते हैं क्योंकि वह तो टीवी और मोबाइल पर अपना समय बिताना पसंद करते हैं। यदि सभी लोग सिर्फ आधा घंटा व्यायाम और योग को दें तो उनकी अनेक प्रकार की मानसिक व शारीरिक बीमारियाँ दूर हो जाएंगी। योग अनेक प्रकार की बीमारियों से मुक्त करवाता है इसलिए हमें 24 घंटे में से कुछ समय व्यायाम को भी देना जरूरी है। शरीर के स्वास्थ्य के लिए योग और व्यायाम दोनों आवश्यक हैं। इनमें से किसी एक को अपनाना आवश्यक है।

" व्यायाम और योग को अपनाएं,
अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा पाएं"

नेहा छौंकर

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

कॉलेज का पहला दिन

जब मैं पहले दिन कॉलेज आने के लिए तैयार हो रही थी तो मेरे अंदर बहुत उत्साह था क्योंकि सबसे कॉलेज के बारे में बहुत सुना था| सब कहते थे कि तुम्हारी जिंदगी का नया सफर शुरू होने जा रहा है। स्कूल से कॉलेज में बहुत अंतर होता हैं। तरह-तरह की बातें सुनने में आईं, यह सब सुनकर थोड़ा डर भी लग रहा था ।परंतु उत्साह भी बहुत था। जब मैं पहले दिन कॉलेज पहुंची तो मुझे बहुत मजा आया। अध्यापिका का पढ़ाने का तरीका स्कूल से बहुत अलग था। बहुत सारे नए - नए दोस्त भी बने। पहले हमारी अर्थशास्त्र की क्लास थी, हमारी अध्यापिका आईं, उन्होंने हमें अपना परिचय दिया तथा उसके बाद एक-एक करके सभी बच्चों ने अपना परिचय दिया। इसके बाद हमारी इंग्लिश की क्लास थी ,उसकी अध्यापिका ने हमें किताब का परिचय दिया। उसके बाद हम फ्री हुए तो फिर हम अपने नए दोस्तों के साथ कॉलेज घूमने निकले। हम कैंटीन गए वहां पहले अपना लंच किया तथा कैंटीन से बर्गर मंगाकर खाया। उसके बाद हमारी कोई क्लास नहीं थी, इसलिए हम अपने-अपने घर के लिए निकल गए। मुझे मेरा कॉलेज बहुत पसंद आया। यहां की सभी अध्यापिकाएँ बहुत अच्छी हैं और दोस्तों मैं सच कहती हूं स्कूल से कॉलेज की दुनिया बहुत अलग होती है। स्कूल में हमारे ऊपर एक दबाव बना रहता है कि पढ़ो, पढ़ो। परन्तु कॉलेज में ऐसा कुछ नहीं होता। दोस्तों ,लेकिन स्कूल की दुनिया का भी अपना एक अलग ही मजा था। कॉलेज के दिनों में अब मुझे स्कूल के दिनों की बहुत याद आती है। वह गृह कार्य न करने के कारण टीचर का डांटना, दोस्तों का लंच चुराकर खा जाना, दोस्तों से लड़ कर गुस्सा हो जाना और फिर तुरंत मान जाना। तो दोस्त कॉलेज और स्कूल दोनों के दिनों का एक अलग ही मजा है इसलिए हमें इन दोनों का इनके अंदाज में मजा लेना चाहिए।

अनामिका सिसोदिया

बी.ए. प्रोग्राम , प्रथम वर्ष

गंगा की आवाज

मैं गंगा नदी हूं, मैं कल-कल बहती रहती हूं। माना जाता है कि सब के पापों को अपने जल में सोखती हूं। सब का पालन-पोषण करती हूं। सभी पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं एवं मनुष्यों को जल प्रदान करती हूं। जब मानव सभ्यता का विकास नहीं हुआ था, तब मैं बहुत स्वच्छ थी। मेरा जल बहुत ही पवित्र था। मछलियां और पानी के सभी जीव मेरी गोद में खेला करते थे। पर वर्तमान समय में अब जब मानव का विकास हो गया है तब मनुष्य मुझे प्रदूषित कर रहे हैं। अपने फायदे के लिए मुझे पीछे धकेल रहे हैं। उन्हें रहने के लिए जगह नहीं मिलती तो मुझे ढक कर अपना घर बना रहे हैं। लोगों ने मुझे घेरना शुरू किया तो मैं थोड़ा सरक गई, यह सोच कर कि आखिर यह मेरा ही तो अंश है।

फिर लोगों ने मुझे और धकेला तो मैं बैठ गई और अब तो लोगों ने हद कर दी वह तो मेरे अस्तित्व को ही खत्म कर देना चाहते हैं। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि मनुष्य अपने फायदे के लिए हर चीज का अत्यधिक शोषण करता है। मनुष्य ने मुझे इतना प्रदूषित कर दिया है कि मेरी गोद में पलने वाले जीव- जंतु सब मेरे ही सामने मर रहे हैं। मुझे बहुत दुख होता है कि जिन मनुष्यों का मैं पालन-पोषण करती हूं वही मेरा अस्तित्व मिटाने में लगे हुए हैं। अतः मैं यही कहना चाहती हूं कि अगर आज तुम मेरी क़द्र करोगे तो कल मैं तुम्हारी जान बचाँऊगी। नहीं तो मुझे प्रदूषित करके मेरा ही पानी पी कर अपनी जान से हाथ धो बैठोगे। मुझे बचाओ और अपनी जान बचाओ। मुझे प्रदूषित मत करो, मैं गंगा मां हूं, सदैव तुम्हारी रक्षा करूंगी बस मुझे मैला ना करो।

'मैं मनुष्यों से कहना चाहूंगी कि अगर तुम अब नहीं रुके तो मैं अपना ऐसा रूप दिखाऊंगी कि तुम्हें कहीं पांव रखने की भी जगह नहीं मिलेगी।'

मीनू

बी ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

दहेज प्रथा

कई पीढ़ियों से हमारी सभ्यता में यह दहेज प्रथा चली आ रही है। पुराने समय से ही इसे माता-पिता अपनी एक अनचाही जिम्मेदारी की तरह लेते हैं। दहेज प्रथा के कारण बेटियों को अपने ही माता-पिता बोझ समझते हैं। यह एक परंपरा है परंतु फिर भी इसे पंडित से लेकर किसान तक सभी निभाते हैं। आज के समय में यह एक जुर्म है, परंतु फिर भी यह जुर्म खुलेआम किया जाता है। माँ-बाप लड़कियों को पढ़ाते नहीं, लेकिन उनकी शादी और दहेज में समाज के हिसाब से काफी पैसा खर्च करते हैं। आज बहुत से घरों में सास अपनी बहू को जिंदा जला देती हैं या उन पर घरेलू हिंसा की जाती है। वक्त थोड़ा बदल रहा है। लड़कियां शिक्षित हो रही हैं और अपने अधिकारों से अवगत हो रही हैं और अपने पर होने वाले अत्याचारों से लड़ने लगी हैं| परंतु बहुत सी लड़कियाँ आज भी कुरीतियों के कारण बंधनों में जकड़ी हुई हैं । आर्थिक-निर्भरता के कारण अब लडकियाँ इस प्रथा में बदलाव लाने की कोशिश कर रही हैं।

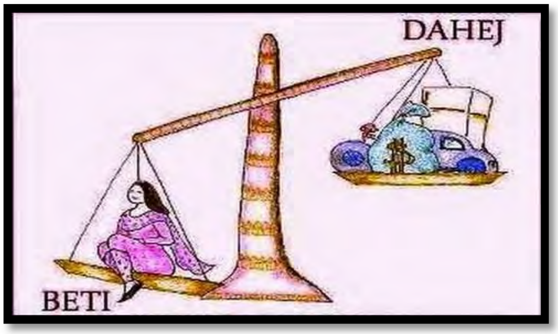

आयुषी गोहर

बी. ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

परीक्षा का तनाव

कक्षा बारहवीं यानी बोर्ड का सफर। जैसे ही कक्षा ग्यारहवीं के पेपर दिए वैसे ही हम पर वह बोर्ड परीक्षा का दबाव पड़ना शुरू हो गया। 12वीं में तो जब हम कक्षा में जाते, वैसे ही विज्ञान की कक्षा चालू हो जाती थी। अंतः तक आते-आते तो बहुत थकान सी महसूस होने लगती थी। ये दबाव हमारे माता-पिता या शिक्षकों का नहीं था बल्कि स्वयं ही तनाव हो गया था कि हमें बहुत अच्छे अंक लाने हैं, हमें कक्षा में टॉप करना है। बहुत प्रयत्नों के बाद आया टेस्ट का दिन, अब बहुत मेहनत के बाद भी आए नंबर कम तो निराशा का स्तर चौगुना हो गया। भौतिक विज्ञान में तो न्यूमेरिकल्स ने जान खायी हुई थी। इतनी लंबी-लंबी वैल्यू याद करना

बेहद मुश्किल हो गया था। केमिस्ट्री में हर एक्शन, फार्मूला, टेस्ट याद रख पाना बेहद कठिन पड़ रहा था। फिर भी धीरे-धीरे समय का सही उपयोग करना सीखा। घरवालों, शिक्षकों ने भी समझाया कि जीवन में सब कुछ अंक ही नहीं होते हैं, आंखों के ऊपर भी दुनिया है। बस इसी तरह रिजल्ट आ गया और मैं कक्षा में प्रथम रही। मुझे इस बात का कोई घमंड नहीं है। बस यह लगता है कि वास्तव में कक्षा 12वीं बेहद तनाव पूर्ण साल रहा।

सौम्या नैना बिश्नोई

बी.ए.प्रोग्राम,प्रथम वर्ष

नफरत

दो अनजान व्यक्ति जब पहली बार मिलते हैं तो उनमें सबसे पहले दोस्ती की शुरुआत होती है। एक दूसरे के बारे में इस हद तक जान लेते हैं कि वह अजनबी से गहरे मित्र बन जाते हैं। उनकी मित्रता की कई कहानियां भी बनती चली जाती हैं। उस समय एकदूसरे के साथ बिताए हुए लम्हे यादगार बन जाते हैं। सालों तक साथ बिताए पलों में घृणा का ऐसा भी पल आता है कि एक दूसरे से नफरत होने लगती है। ना जाने कैसे सालों की उस दोस्ती में घृणा इतनी बढ़ जाती है कि दो गहरे मित्र एक दूसरे से इस हद तक नफरत करने लगते हैं कि एक-दूसरे की शक्ल देखना भी गवारा नहीं होता।

इतने सालों की गहरी दोस्ती में घृणा केवल दो ही कारणों से आती है- दोनों में से किसी एक की तनख्वाह ज्यादा होना, नौकरी में सफलता पाने पर घमंड करना या दो दोस्तों के बीच किसी तीसरे व्यक्ति के प्रवेश करना।

अगर वह दोनों एक दूसरे को समझते हों, जानते हों, तो कोई भी कारण क्यों ना हो दोस्ती टूट नहीं सकती। जब दोस्ती नफरत में बदलती है तो कुछ अलग ही रूप में दिखती है। जो दोस्त किसी समय में एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे, अब एक-दूसरे की जान भी लेने को तैयार हो जाते हैं जैसे कि कभी दोस्ती थी ही नहीं।

नफरत तो किसी भी कारण से किसी भी अच्छे -भले रिश्ते को पलभर में खत्म कर सकती है। नफरत का भाव किसी रिश्ते में प्रेम के भाव से बड़ा बन जाता है। इससे बचने के लिए हमेशा एक दूसरे को गहराई से समझने की कोशिश करनी चाहिए और यदि आवश्यकता पड़े तो एक दूसरे के लिए थोड़ा सा झुक भी जाना चाहिए।

कृतिका कपूर

हिन्दी विशेष ,द्वितीय वर्ष

पिता का प्रेम

आज मैं पिता के बारे में लिख रही हूं। मां का प्यार तो सब जानते हैं, लेकिन जो संघर्ष पिता अपने बच्चे के लिए करता है वह शायद माँ भी नहीं करती। एक लड़की के लिए उसके पिता उसके गुरु जैसे होते हैं। जो कदम-कदम पर उसका साथ देते हैं चाहे वह किसी भी मुसीबत में हो। मेरे पापा ने मुझे हर मुसीबत में लड़ना सिखाया है और शायद सबके ही पापा अपनी बेटी को यही सिखाते हैं। मैं जब घर से बाहर होती हूं तो मेरे पापा मुझे बार-बार फोन करते रहते हैं और पूछते हैं कि कैसी हो? कहां हो? मुझे गुस्सा भी आता है क्योंकि उन्हें पता है कि मैं कॉलेज में हूं फिर भी यही सवाल बार-बार पूछते हैं। लेकिन जब फोन काटते हैं तब मुझे उनकी चिंता समझ आती है। जब लड़कियों की शादी होती है तो माँ-बाप उन्हें समझाते हैं कि घर-परिवार को संभाल कर रखना। किसी से ऊंची आवाज में बात मत करना। पर मेरे पापा समझाते हैं कि कोई कठिनाई हो तो उसका विरोध करो, चुप मत रहो। इससे ज्यादा क्या कहूं ,जितना भी लिखो शायद कम पड़ जाए।

निशा

बी. ए. प्रोग्राम,प्रथम वर्ष

शिक्षा

शिक्षा अर्थात् किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करना। शिक्षा सभी व्यक्तियों के लिए आवश्यक है। शिक्षा ऐसा एकमात्र साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को निखार सकता है। जिंदगी में कोई मुकाम हासिल कर सकता है। शिक्षा छोटे से बच्चे से लेकर जवान और बुड्ढे व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने अंदर के हुनर को समाज के सामने प्रस्तुत कर सकता है। जब व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करता है, तो वह अच्छी आदतें सीखता है। बड़ों का आदर करना तथा सम्मान लेना व देना सीखता है। दूसरे व्यक्तियों से बातचीत करना सीखता है। समाज व सामाजिकता के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। शिक्षा किसी भी समय व स्थान पर प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा ग्रहण करने की कोई उम्र नहीं होती, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन भर चलती रहती है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसकी शुरुआत घर से की जाती है और शिक्षा की यह प्रक्रिया जीवन- भर चलती है। शिक्षा के चलते व्यक्ति अपने गुणों को उभारता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने अधिकारों की जानकारी भी प्राप्त करता है और समाज में हो रही सभी परिस्थितियों पर अपनी नज़र रखता है। आज स्कूलों में शिक्षा के लिए नयी –नयी तकनीकें अपनाई जा रही है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के द्वारा पढ़ाई करवाई जाती है, 'ई' कक्षाएं दी जाती हैं। नई रचनात्मक शिक्षा के लिए स्कूल एक ऐसा स्थान है, जहां से व्यक्ति अपने शिक्षित जीवन की प्रक्रिया की शुरुआत करता है। स्कूल के बाद भी यह प्रक्रिया समाप्त नहीं होती। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की सभी कठिन परिस्थितियों से छुटकारा पा सकता है। वह उन्हें हल करने का प्रयास कर सकता है इसलिए कहा जाता है कि शिक्षा सभी व्यक्तियों का अधिकार है चाहे वह अमीर हो या गरीब।

मनीषा लोहिया

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

भारत में लैंगिक असमानता

लैंगिक असमानता सिर्फ एक शब्द नहीं है, यह भारत की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। जब हम लैंगिक असमानता शब्द सुनते हैं तब हमें लगता है कि हम ऐसा व्यवहार नहीं करते क्योंकि हम तो खुले विचारों वाले हैं। अपनी बेटियों को बेटे जैसा मानते हैं। तो फिर हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जब हम अपनी बेटी को मजबूर करते हैं कि उसे ही अपने घर की जिम्मेदारी उठानी है और अपने बेटों को बाहर के कामों के लिए छोड़ देते हैं तब हम लैंगिक असमानता का व्यवहार करते हैं। आजकल तो भारत कुछ हद तक विकसित हो चुका है, फिर भी बच्ची को मां के पेट में मार देने जैसी खबरें सुनाई पड़ती हैं। जो काम आप खुद को खुले विचार वाला समझ कर करते हैं, जिससे आपकी बेटियों को कम समझा जाता है उसका क्या करें? आप अपनी बेटियों को जिस तरह पालते हैं, उससे पता चलता है कि वह कमजोर है कि नहीं। अक्सर देखा जाता है कि बेटियों से घर के काम करवाए जाते हैं| उन्हें यह समझाया जाता है कि उन्हें आगे यही काम करना है इसलिए घर संभालना उन्हें बचपन से आना चाहिए और लड़के उनका क्या है? उन्हें कौन-सा कल को ससुराल जाना है, जो वो चूल्हा चौका संभाले? उन्हें तो बाहर के काम ही करने हैं, घर के लिए पैसा कमाना है| जब आप यह सोच रखते हैं ना, तब आप लैंगिक असमानता का व्यवहार करते हैं। अक्सर देखा जाता है कि जिस घर में नया जन्मा बच्चा होता है, वहां भी लैंगिक असमानता का व्यवहार होता है। जिस घर में लड़का जन्मता हैं वहां बच्चों को उपहार में गाड़ी दी जाती है। जहाँ लड़की जन्मती है तो वहां गुलाबी रंग के वस्त्र आते हैं और उसे मुलायम खिलौने उपहार में दिए जाते हैं। जब हमारे विचार इतने खुले हैं तो ऐसा असमानता का व्यवहार क्यों? क्यों हम अपनी बेटियों को मुलायम खिलौने देकर उन्हें और पूरे समाज को एक एहसास कराते हैं कि लड़कियां लड़कों से कमजोर होती हैं।आपके इस कार्य से हमारा समाज लड़कियों को कमजोर समझने लगता है। आपका यह कार्य हमारे समाज के लड़कों को हिम्मत देता है कि वह लड़कियों के साथ कुछ भी कर सकते हैं। इसी वजह से आज हमारे समाज में बलात्कार, अपहरण, घरेलू हिंसा जैसे घिनौने अपराध हो रहे हैं। फिर आप अपनी बेटियों को

यह कह कर रोकते हैं कि बाहर छोटे कपड़े पहन कर मत जाओ आज कल का समाज बहुत खराब है। पर फिर आप ही क्यों भूल जाते हैं कि आप और हम से ही समाज बनता है। अगर आप बदलेंगे तो समाज खुद-ब-खुद बदलेगा। मेरे अनुसार कमजोर लड़कियां नहीं, बल्कि समाज है जो हमारी लड़कियों को बेटों जितना बलवान स्वीकार नहीं कर पा रहा। अतः मैं यही कहना चाहूंगी कि अगली बार अपनी बेटियों से नहीं, अपने बेटों से कहना कि जाओ घर के काम सीखो क्योंकि आगे तुम्हें अपनी पत्नी की मदद करनी है और बेटियों से कहना कि जाओ जाकर पढ़ाई करो क्योंकि तुम्हें नाम और पैसा कमाना है। आपकी इस सोच और कदम से समाज जरूर सुधरेगा!

ज्योति शर्मा

बी.ए.प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

ऐ जिंदगी

यह जिंदगी हमें कितना सिखाती है। कभी हम अपनी जिंदगी से खुश हुआ करते थे, परंतु अब हम अपनी जिंदगी से परेशान हैं। जिंदगी ने हमें प्रतिस्पर्धा सिखाई हैं, यह हमें जीना सिखाती है। बचपन में हम खुशी-खुशी जीते थे, पर अब हम जिंदगी से परेशान हैं क्योकि यहां हर जगह हमें प्रतिस्पर्धा ही दिखती है। अच्छे कॉलेज में दाखिला लेना होता है, तो हम जैसे विद्यार्थियों को अच्छे अंक लाने पड़ते हैं ताकि हमारा अच्छे कॉलेज में दाखिला हो सके। वहां हम सोचते हैं कि अब दाखिला हो गया तो अब जिंदगी जीना सरल हो जाएगा, परंतु वास्तविकता यह नहीं है। यहां आकर पता चला कि हमें सरकारी नौकरी या अच्छी नौकरी लेने के लिए संघर्ष करना है। इस प्रतिस्पर्धा की दुनिया में हमने अपना बचपन भी खो दिया हैं:

कभी खामोश है,कभी परेशान हैं,

क्यों तू इतनी परेशान है,
ऐ जिंदगी ।
उलझन जो है तेरी
मुझको तू बतला दे,
वक्त बेईमान है,

ऐ जिंदगी ।

तेरा-मेरा रिश्ता तो है गहरा बड़ा..

फिर पेश आती है तू क्यों इस तरह.

ऐ जिंदगी ऐ जिंदगी ...

कहकशा

हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष

माता-पिता

माता-पिता हमारे जीवन में बहुत अहम भूमिका निभाते हैं। माता-पिता ईश्वर जैसे ही प्रेरक,ईमानदार और मार्गदर्शक होते हैं इसलिए उन्हें ईश्वर के बाद स्थान दिया गया है। उन्हें ईश्वर रूप इसलिए माना गया है क्योंकि हर जगह पर ईश्वर नहीं पहुंच सकता। ईश्वर ने माता-पिता का रूप लिया जो हर वक्त अपने बच्चों के लिए खड़े होते हैं | स्वयं चाहे कितनी भी मुसीबत से घिरे हुए होते हैं, पर हमेशा हमारे लिए सोचते हैं। हमेशा संघर्ष करके हमारी सभी ख्वाहिशों को, सभी सपनों को पूरा करते हैं। संसार में कोई भी इनका स्थान नहीं ले सकता ।

लेकिन कई बार देखा जाता है कि बहुत सारे बच्चे बड़े होकर अपने माता-पिता को साथ नहीं रखते और उन्हें वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। जब कि इस आयु में उन्हें बच्चों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। यह बहुत बुरी बात है क्योंकि इस तरह लोग बच्चों पर भरोसा करना छोड़ देंगे। माता-पिता सोचेंगे कि आगे चलकर एक ऐसा मोड़ आएगा कि बच्चे हम लोगों को छोड़ देंगे। अपने साथ ऐसा होने के बावजूद भी वे अपने बच्चों को कभी नहीं भूलते और अपने बच्चों की हर बुराई और गलतियों को माफ कर देते हैं। इसलिए उन्हें ईश्वर का दर्जा दिया गया है।

आंचल सोनकर

बी.ए. प्रोग्राम , प्रथम वर्ष

विभिन्न सामाजिक सरोकार: कुछ विचार

बच्चों और युवाओं पर मुसीबत

पिछले कुछ दिनों की घटनाओं को खंगाले तो यह पता चलता है कि सरकार की तमाम अव्यवस्था और लापरवाही का शिकार बच्चे, किशोर और युवा वृहद् स्तर पर हो रहे हैं। आत्महत्या की प्रवृत्ति भी युवाओं और किशोरों में बढ़ती जा रही है, कुपोषण से संबंधित मामले निरन्तर चिंतनीय तौर पर वृद्धि कर रहे हैं। बच्चियों के साथ बलात्कार के मामले बढ़ते जा रहे हैं। इन सभी समस्याओं के कई कारण हैं जिनका दुष्परिणाम बच्चे और युवा अपनी जान गंवा कर चुका रहे हैं ।

आत्महत्या से संबंधित आंकड़े और कारण

2015 में देश में छात्र आत्महत्याओं की कुल संख्या 8934 थी| जिसमें से अधिकतम संख्या महाराष्ट्र राज्य में 15 से 29 वर्ष की आयु के युवाओं की थी। आत्महत्याओं के मामले में इसी क्रम में दूसरा राज्य तमिलनाडु और तीसरा राज्य छत्तीसगढ़ था। 15 वर्ष से कम आयु में आत्महत्या करने वाले किशोरों में दिल्ली आगे है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार आत्महत्या करने के कारणों में सामाजिक और पारिवारिक माहौल, कुंठा के अलावा वित्तीय मुद्दे और मानसिक तनाव हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य की 2015 और 2016 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 22% से अधिक जनसंख्या मादक द्रव्यों के दुरूपयोग से ग्रस्त है। अन्य कारणों की बात करें तो भारत मानसिक स्वास्थ्य पर पर्याप्त बजट खर्च नहीं करता है। वर्तमान में स्वास्थ्य बचत का एक छोटा अंश ही मानसिक स्वास्थ्य पर खर्च होता है। जो भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश से भी कम है। इसके अलावा विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में परामर्श केंद्र की कमी है।

स्वास्थ्य चिकित्सा और कुपोषण से संबंधित आंकड़े और कुछ कारण

विख्यात शोध पत्रिका लैसेट की हालिया रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्वास्थ्य सेवा की पहुंच और गुणवत्ता के मामले में 195 देशों की सूची में 145 वें स्थान पर है। वर्ष 1990 में 153 में से 97 वें पर था। इतने दशकों में बस केवल 16.5 अंकों की बढ़ोतरी हो पाई है। कारण है बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भी स्वास्थ्य पर कुल जीडीपी का छोटा अंश खर्च किया जाता है। हालांकि अब खर्च बढ़ा दिया गया है लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। आयुष्मान भारत जैसी नीतियां

सरकार द्वारा चलाई गई। लेकिन ऐसी कई और नीतियों की गंभीर जरूरत है| वह भी बिल्कुल पारदर्शिता के साथ, यह चिंताजनक स्थिति है कि विश्व स्तर पर होने वाली कई बीमारियों में से अकेला भारत 20% बीमारियों से ग्रस्त है। स्वास्थ्य का अधिकार जनता का पहला बुनियादी अधिकार होता है भारत में बेहतर स्वास्थ्य सेवा का अभाव भारत को कई पड़ोसी देशों से पीछे कर रहा है । विशेषकर सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर और स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव पाया जाता है। निजी अस्पतालों में सेवा की आड़ में मेवा लूटा जाता है। यह भी एक प्रश्न करने वाली बात है कि निजी अस्पतालों का विस्तार आजादी के बाद बढ़ गया है| ऐसे में यहां यह प्रश्न उठता है कि जहां आर्थिक पिछड़ेपन की शिकार जनसंख्या निवास करती है वहां चिकित्सा और स्वास्थ्य जैसी सेवाओं का निजी हाथों में होना कितना उचित है?

कुपोषण से संबंधित आंकड़े और कारण

संयुक्त राष्ट्र संघ एवं कृषि संगठन की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में कुपोषित लोगों की संख्या 19.07 करोड़ है। यह आंकड़ा दुनिया में सर्वाधिक है । 15 से 50 वर्ष की महिलाओं में (51.4%) खून की कमी है 2016 में वैश्विक भूख सूचकांक में 118 देशों में से भारत का 97 वां स्थान है । राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015-16 के अनुसार 6 से 23 महीने की आयु के 10 भारतीय शिशुओं में से केवल एक को ही पोषण से भरा आहार प्राप्त होता है| जब कुपोषण से संबंधित मुद्दों की बात की जाती है तो हम हाल की सबसे चिंताजनक आपत्ति की स्थिति बिहार के मुजफ्फरपुर में देख सकते हैं| डेढ़ सौ से अधिक बच्चे [एक्यूट इनसे फ्लाइट सिंड्रोम] जिसे लोग चमकी बुखार के नाम से भी जानते हैं, से पीड़ित थे। जानकारों का कहना है कि मुजफ्फरपुर में बीमारी का मुख्य कारण तापमान में वृद्धि, समाज में बढ़ते कुपोषण के अलावा खाली पेट लीची खाना भी है। मुजफ्फरपुर के शिशु विशेषज्ञ डॉक्टर अरुण शाह बच्चों की मौत की वजह कुपोषण और तापमान को मानते है। मुजफ्फरपुर के मामले में देखा जाए तो कुपोषित बच्चों के शरीर में कई आवश्यक विटामिन और तत्वों की मात्रा बहुत कम थी। इसीलिए लीची खाने से लीची में मौजूद बीज में हाई प्रोफाइड सी ग्लाइसिन नामक न्यूरो टॉक्सिंस बच्चों के भीतर एक्टिव हो जाता है तो उनके शरीर में ग्लूकोस की कमी हो जाती है। इस कारण बच्चे हाइपोगलाइसीमिया और इंसेफलाइटिस का शिकार हो जाते हैं और बीमारी की चपेट में जल्दी आते हैं। इसके अलावा देखें तो बिहार में 38 जिलों में से 23 जिलों में कुपोषण है।

मुजफ्फरपुर में पिछले दिनों 299 बच्चों के परिवारों का आर्थिक-सामाजिक सर्वेक्षण किया गया था।जिसमें 280 बच्चों के परिवार गरीबी रेखा से नीचे हैं। इसीलिए यह साफ तौर पर नज़र आता है कि बच्चों को पर्याप्त पोषण नहीं मिल रहा है । यह मुद्दा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा का मुद्दा है। हमारे पास जो स्वास्थ्य सेवा है वह दुरुस्त नहीं है। जो पीड़ित हैं, उनका पूरी तरह इलाज नहीं हो पाता तो वहां महामारी जैसी आपातस्थिति में लोगों का इलाज कैसे मुमकिन है? इसलिए आज सबसे बड़ी चुनौती स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाना है ।

बलात्कार से सम्बन्धित आंकड़े

पिछले 10 सालों में भारत में बच्चों के साथ बलात्कार और यौन शोषण के मामले 3•4 गुणा बढ़े हैं| यह स्थिति देश की सबसे विकट समस्या बनती जा रही है। अतः बलात्कारियों के लिए सजा के प्रावधान कडे होने चाहिएं ।

निष्कर्ष

भारत में हुए शोध के अनुसार 50%बच्चे बचपन के अधिकारों से वंचित हैं|यह भी चिंतनीय है क्योँकि भारत दुनिया का अधिक युवा आबादी वाला देश है । लेकिन आज अधिकतर लोग बच्चों के प्रति असंवेदनशील क्यों हैं ? अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकार समझौता बच्चों को जीवन का अधिकार, सुरक्षा, विकास और सहभागिता का अधिकार देता है| क्या यह अधिकार उन्हें मिल रहा है? दूसरी तरफ हमारे यहाँ युवा दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक हैं। जापान तेजी से बूढ़ों का देश बनता जा रहा है। वहां 2060 तक 40% लोग 65 वर्ष के होंगे। वहीं भारत में युवाओं की संख्या कम होगी। जापान में भविष्य में काम करने वाले नहीं मिलेंगे। क्या हम बच्चों और युवाओं की कद्र कर रहे हैं? हम बाल और युवा आबादी को सक्षम और सबल तभी बना सकते हैं जब उनकी बुनियादी जरूरतों, मुद्दों को गंभीरता से समझें और उनका असरदार समाधान निकालने की दिशा में क्योँकि अब समय आ गया है कि सब देश के भविष्य के प्रति संवेदनशील हो जायें।

कंचन

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कला

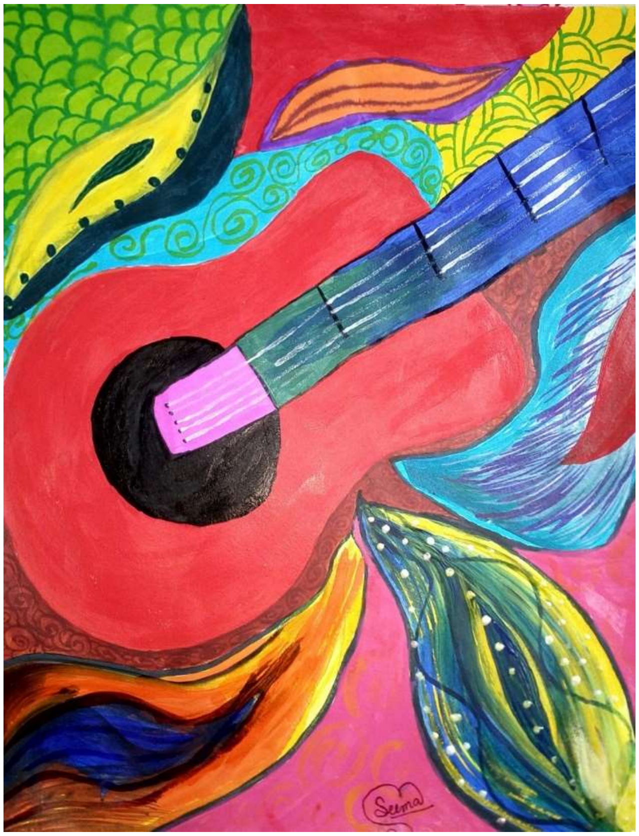

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है अतः वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

रवीन्द्र नाथ टैगोर

'मृणाल'

अनुरति

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

नाचती बेला

अनुरति
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोय

भावना शर्मा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बारीकी में छुपी, सुंदरता की पहचान है

भावना शर्मा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मैत्रेयी कॉलेज

प्रतिबद्धता

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कॉलेज को ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करना